Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
https://www.srjis.com/issues_data/224
Peer Reviewed, Refereed & Indexed Journal, Nov-Dec, 2023, Vol- 12/80
https://doi.org/10.5281/zenodo.10512116

सतत विकास के संदर्भ में विद्यालय जीवन का अध्ययन

विपिन सिंह[1]

शोधार्थी, शिक्षा विभाग [बिड़ला परिसर] हेमवंती नन्दन गढ़वाल विश्वविद्यालय [केन्द्रीय विश्वविद्यालय] श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड

प्रोफेसर सीमा धवन[2]

शिक्षा विभाग [बिड़ला परिसर] हेमवंती नन्दन गढ़वाल विश्वविद्यालय [केन्द्रीय विश्वविद्यालय] श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड

Paper Received On: 25 Dec 2023

Peer Reviewed On: 28 Dec 2023

Published On: 01 Jan 2024

Abstract

सतत विकास जो हमारे भावी पीढ़ीयों की अपनी जरूरतें पूरी करने की योग्यता को प्रभावित किए बिना वर्तमान समय की आवश्यकता पूरा करें। छात्र किसी भी राष्ट्र, समाज का एक अभिन्न अंग है और विद्यालय का इसमे अहम योगदान है जिसमे की विद्यालय के साथ साथ शिक्षक छात्र विद्यालय प्रबंधन को सतत विकास से सबन्धित सभी आवश्यक कौशलों, दृष्टिकोण और मूल्य होंना जरूरी है यह पेपर विद्यालय जीवन का सतत विकास में संभावित योगदान से संबन्धित है। इस शोध अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने गुणात्मक शोध का प्रयोग किया, जिसमें शीर्षक सतत विकास के संदर्भ में विद्यालय जीवन का अध्ययन पर केस अध्ययन किया गया इस शोध के लिए शोधार्थी ने उत्तराखंड का एक राजकीय विद्यालय का चयन किया जिसमे की शोधार्थी ने नौ निर्धारित आयामो के आधार पर एक सप्ताह विद्यालय में रहकर गुणात्मक शोध का प्रयोग किया गया, तथा प्रेक्षण प्रविधि और साक्षात्कार प्रविधि के प्रयोग के आधार पर शोध कार्य पूर्ण किया। निष्कर्ष के

शब्दावली*:* सतत विकास विद्यालयी जीवन

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

परिचय-

किसी भी प्रकार के विकास एवं उन्नति के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है, शिक्षा के अभाव में कुछ भी अर्थपूर्ण हासिल नहीं किया जा सकता है, यह लोगो के के जीवन स्तर में सुधार तथा उनके जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु क्षमताओं का निर्माण कर तथा बेहतर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गुणवततापूर्ण शिक्षा सतत विकास की बुनियाद है इसलिए सतत विकास के महत्वपूर्ण 17 लक्ष्यो में से एक लक्ष्य गुणवततापूर्ण शिक्षा भी है, शिक्षा ताकत को कई गुना बढ़ाने वाली शक्ति है, शिक्षा का एक मुख्य औपचारिक केंद्र विद्यालय है, इसी विद्यालय जीवन में रहकर हमारे देश का प्रत्येक युवा अपनी बुनियाद को मजबूत करने का कार्य करता है, यही से वह शिक्षा के माध्यम से उदेश्यपूर्ण जीवन को प्रारम्भ करता है, और नयी चीजों को सीखता है। अच्छा और बुरा,हित और अहित को समझने में शिक्षा मददगार साबित होती है,विद्यालय जीवन सतत विकास को समझने में एक अहम भूमिका निभाता है, सतत विकास के लिए शिक्षा का मुख्य उदेश्य सतत भविष्य के लिए समाज में परिवर्तन करना है विद्यालयी शिक्षा में इसका कार्य विद्यार्थियो में गुणो का विकास और उन्हे शसक्त करने से है, जिससे वे सतत विकास में अपना योगदान दे सकें। सतत विकास के तहत 17 लक्ष्यों को रखा गया है जिन्हे 2030 तक पूर्ण करने का लक्ष्य बनाया गया है।

ब्राटलेंड रिपोर्ट के अनुसार सतत विकास का अर्थ है वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझोते किए बिना पूरा करना।

शोध प्रश्न – प्रस्तावित शोध परिचय पर निम्नलिखित शोध प्रश्नों की उत्पति हुई है।

1. सतत विकास के संदर्भ में विद्यालय जीवन कैसा है?
2. सतत विकास के संदर्भ में विद्यालय का वातावरण कैसा है?

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3. सतत विकास के संदर्भ में प्रधानाध्यापक क्रियाकलाप कैसा है?
4. सतत विकास के संदर्भ शिक्षक क्रियाकलाप कैसा है?
5. सतत विकास के संदर्भ में छात्रो का क्रियाकलाप कैसा है ?
6. सतत विकास के संदर्भ में विद्यालय में कक्षा-कक्ष अंतःक्रिया कैसा है?

समस्या की उत्पति-

प्रस्तुत शोध शीर्षक के संदर्भ में अनुसन्धांकर्ता द्वारा इस बात की कमी समाज में देखने को मिली कि समाज में लोग सतत विकास की अवधारणा के बारे में बहुत कम मात्रा में जागरूक है, जबकि सतत विकास राष्ट्रीय ही नहीं अंतराष्ट्रीय स्तर का एक मुख्य विषय है। इसमे 17 लक्ष्य रखे गए है जिन्हे 2030 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है, ये लक्ष्य तब तक पूरे नहीं किए जा सकते है,जब तक इसके लिए जमीनी स्तर पर कार्य नहीं किया जाएगा जब तक समाज इस चीज को सही ढंग से नहीं समझ पाएगा। समाज के अंदर जागरूकता लाने के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है और शिक्षा को समाज तक पहुंचाने में विद्यालय की अहम भूमिका होती है।

सबन्धित साहित्य का अध्ययन-

रेड्डी, (1972) ने बड़ौदा ओर पंचमहल जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक पर्यावरण का अध्ययन किया। शोध
उपकरण में उन्होने ऑर्गनाइज़ेशन क्लाइमैट इंडेक्स का प्रयोग किया । शोध निष्कर्ष में पाया कि-

1.बड़े आकार के विद्यालय के बौद्धिक क्षमता प्राप्ति का स्टैंडर्ड कम होता है। 2. छोटे आकार के विद्यालयों मे नियंत्रण क्षमता बड़े विद्यालय से अधिक होता हैं। 3.छोटे विद्यालय का संगठनात्मक पर्यावरण बड़े विद्यालय से तुलनात्मक रूप से अच्छा होता हैं। 4.विद्यालय के बड़ी उम्र का स्टाफ ,युवा वर्ग के स्टाफ से तुलनात्मक रूप से अच्छा कार्य नहीं करता है ।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

चौहान,(1985) "उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारवारिक सामाजिक एवं विद्यालयी घटकों का प्रभाव एक अध्ययन"।

अध्ययन के निष्कर्ष-

वातवरण छात्राओं की शैक्षिक संप्राप्ति को प्रभावित करता है उनके अनुसार उच्चतम संप्राप्ति के माध्यमिक विद्यालय शांत, स्वच्छ शहर की घनी आबादी से दूर व मधुर शैक्षिक एवं प्राकृतिक वातवरण से मुक्त थे। कक्षा कक्ष उपर्युक्त व प्रर्याप्त फर्नीचर की व्यवस्था उपर्युक्त पाई गयी थी।

पाण्डेय, (1990) ने संस्थागत वातावरण एवं नैतिकता का अध्ययन किया। इन्होने अपने अध्ययन के न्यादर्श में याद्दच्छिक रूप से 34 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 500 अध्यापकों का चयन किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया की संस्थागत वातवरण और अध्यापक मनोबल के बीच गहन संबंध है। अध्यपकों के मनोबल और प्रेरणा विद्यालयों में स्वस्थ एवं खुला वातवरण होने से उनके व्यवसाय में गुणवत्ता लाते है, घृणा युक्त और संकुचित वातवरण अध्यापक के कार्य के साथ उनके परिणाम में भी बाधा डालते है, जिससे शिक्षा ज्ञान-प्रक्रिया बाधित होती है।

ब्लेयर(1998) ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि छात्र आने वाले कल के लिए तब तक तैयार नहीं हो सकते है जब तक की उन्हे बीते हुए कल के कौशलों में पारंगत न कर दिया जाये तथा अध्यापक उन उपकरणों व साधनो के उपयोग से इंकार नहीं कर सकते जो कि अन्य व्यवसाय के लोग अपने व्यवसाय के विकास हेतु उपयोग में लाते है।मनोबल एवं प्रेरणा अध्यापकों के वातवरण से सकारात्मक रूप से संबंध पायी गयी।

मैति,**रूबीना (2008)** ने "अध्यापकों की प्रभावशीलता का उनके मूल्यों पर प्रभाव" विषय पर शोधकार्य किया जिसमे उन्होने निष्कर्ष रूप में पाया की ऐसे अध्यापक जो अपने व्यवसाय के प्रति गंभीर होते है वे अधिक प्रभावशाली होते है स्वयं के कार्य से

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संतुष्ट रहते है अतः प्रभावी व कम प्रभावी आचार्यों के गुणवत्ता में सकारात्मक विचारों की प्राप्ति हुई।

अग्रवाल (2012) "क्वालिटी कन्सर्नस इन प्राइमरी एजुकेशन इन इंडिया''

एन.सी.ई.आर.टी दिल्ली स्टडी के अनुसार शिक्षा में गुणवत्ता स्वतः नहीं आ सकती है, इसके लिए विशेष प्रशिक्षण स्कूल की आधारभूत सुविधाओं व संरचना में सुधार शिक्षक प्रेरणा एवं आकर्षक व रुचिकर शिक्षण आवश्यक है। सतत व्यापक मूल्यांकन की सिफ़ारिश भी इस अध्ययन में की गयी है। राज्यों के अलावा केंद्र प्रवर्तित योजनाओं द्वारा भी गुणवत्ता में सुधार के प्रयास किए जा रहे है। यह तथ्य भी उभरकर आया है कि प्राथमिक स्तर पर गणित और भाषायी ज्ञान की मजबूती बहुत आवश्यक है। अंग्रेजी व गणित विषय का उपलब्धि स्तर न्यून पाया गया। सरकारी विद्यालयों की तुलना में निजी क्षेत्र की प्रगति श्रेष्ठ थी यदपि निजी विद्यालय भी न्यूनतम अधिगम स्तर के लक्ष्य से काफी दूर थे। पाठ्यक्रम को अपग्रेड़ करने व प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक के नेतृत्व का प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है।

विद्यालय प्रस्तुतीकरण –

शोध शीर्षक के लिए चयनित आयामों पर विद्यालय प्रस्तुतीकरण इस प्रकार है-

1. विद्यालय परिचाय- शोध कार्य हेतु शोधकर्ता विद्यालय में पहुँचे,विद्यालय रा0इ0का0 देवीखेत वर्तमान में दो अलग-अलग बडे भवनों में संचालित हो रहा है। जिसमें कि एक मुख्य भवन वर्तमान में वहाँ सभी कक्षायें संचालित होती है। शोधकर्ता मुख्य बाजार से प्रथम मुख्य भवन में पहुँचे मुख्य भवन तक पहुँचने के लिये एक पक्के रास्ते का निर्माण किया गया है विद्यालय शहर से 200 मी0 की दूरी पर स्थित है। यहाँ पहुँचकर आभास हुआ जहाँ एक ताजगी से भरा वातावरण अपनी और प्रभावित कर रहा था। विद्यालय का एक सुन्दर दृश्य देखने को इस प्रकार मिला विद्यालय के भवन का दृश्य जिनमे कक्षायें संचालित हो रही है। उसका आकार एक लम्बी ट्रेन की भाँति नजर आ रही थी, जिसमें

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कक्षाएं एक छोर से दूसरी छोर तक फैली हुआ है। विद्यालय एक शान्त व सुगम्य स्थान पर स्थापित है जिसमें कि एक बड़ा हरा भरा खेल का मैदान जो की काफी विस्तृत है तथा विद्यालय में कक्षा कक्ष के आगे फलो के लिये क्यारियाँ बनायी हुई है यद्यपि क्यारिया खाली थी इसमे पुष्प नही थे, और विद्यालय के कक्षाओ मे कक्षा संचालित हो रही थी कक्षाओ के समक्ष से बड़े खेल के मैदान पर पहुँचने पर एक ताजगी भरा अहसास हुआ इस प्रकार के शान्ति से भरा मनमोहक दृश्य को देखकर प्रतीत होता है कि विद्यालय का यह वातावरण छात्रों के पठन-पाठन और जीवन शिक्षा के पूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अनुकूल है।

2. विद्यालय में स्वच्छता –

2.1 विद्यालय में बाह्य स्वच्छता –

विद्यालय स्वच्छता के संदर्भ में विद्यालय के बाहरी भाग का निरीक्षण किया गया जिसमे शोधकर्ता द्वारा पाया गया कि विद्यालय के बाहरी भाग में खेल के मैदान स्वच्छ नजर आ रहा था तथा विद्यालय की दीवारों पर भी रंगरोहन किया गया था। जिससे दीवारें स्वच्छ नजर आ रही थी, विद्यालय के कक्षाओं के आगे की स्थिति स्वच्छ थी साथ ही विद्यालय के एक छोर दाहिने तरफ को पानी का पोस्ट है यदपि जहां पर की पानी एकत्रित हो रखा था, विद्यालय के बाह्य भाग सुंदर व स्वच्छ नजर आ रहा था।

2.2 विद्यालय के बाह्य खेल के मैदान से जो की कक्षाओं के समक्ष है ,यहाँ से विद्यालय के कक्षाओं तक पहुंचा गया लेकिन कक्षाओं के अंदर प्रवेश करने पर स्वच्छता की वास्तविकता नजर आई –

- कक्षा में प्रवेश करने पर सीधी नजर कक्षा की दीवारों पर पड़ी जो की बिना रंगरोहन की मैली पड़ी दिख रही थी, दीवारे कई स्थानो पर तोडफोड रखी थी। कक्षा की दीवारों पर न तो कोई शिक्षण संबन्धित चार्ट, न ही कोई प्रेरित करने वाली पंक्ति कुछ भी नहीं था, दीवारें पूरी तरह से खाली पड़ी हुई थी।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- विद्यालय की फर्श भी टूटी फूटी अवस्था में थी तथा फर्श पर कागज फाड़ के बिखरे हुए थे।
- कक्षा में शिक्षक की कुर्सी ,टेबिल पर पूरी धूल लगी हुई थी, कक्षा में दायें तरफ छात्र और बाईं तरफ छात्राएँ बैठे हुए थे उनके पीछे की तरफ पूरी तरह से अव्यवस्था फैली हुई थी, टूटी-फूटी कुर्सियाँ, विद्यालय का पोडियम, पुरानी चटाई पड़ी हुई थी।
- कक्षा की खिड़की के दरवाजे भी टूट रखे थे, खिड़की से बाहर झाँकने पर स्थिति और भी दयनीय थी, खिड़की के ठीक नीचे बिस्किट,टाफी के रैपर, कागज फाड़ के डाले हुए थे।
- द्वितीय दिवस पर भी अन्य कक्षाओं में जाने पर भी वही स्थिति दिखाई दी जो पूर्व के दिन थी दीवारे मैली पड़ी हुई थी कक्षा मे टॉफी, बिस्किट के रैपर कागज फाड़े हुए थे,कक्षा में सफाई नहीं की जाती है।
- कक्षाओं की स्वच्छता का निरीक्षण करने पर नई बात सामने आई कि विद्यालय में कई दिन तक झाड़ू नहीं लगता है, विद्यालय में लंबे समय से कोई सफाई कर्मचारी भी नहीं है।

साक्षात्कार के माध्यम से शिक्षक से इस संबंध में पूछा गया, तो उत्तरदाता02[A] द्वारा बताया गया कि '' व्यक्तिगत रूप से मैंने कई दिन छात्रों के साथ स्वच्छता के लिए कार्य किया लेकिन एक व्यक्ति अकेले कुछ नहीं कर सकता इसके लिए सबको मिल के कार्य करना होगा''। शिक्षक के इस बात से स्पष्ट हो रहा है कि विद्यालया में सभी शिक्षक इसके लिए कार्य नहीं करते है। विद्यालय प्रबंधन द्वारा मिल जुल के स्वच्छता के प्रति छात्रो और स्वयं में जागरूकता लाने के लिए कार्य नहीं किया जा रहा है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2.3 छात्रों में स्वच्छता –

छात्रों में स्वछता का अभाव पाया गया जिसमे की कई छात्र-छात्राएँ बिना यूनिफोर्म के विद्यालय में आए हुए थे तथा कुछ छात्र यूनिफ़ोर्म तो थे लेकिन यूनिफोर्म मैली हुई थी, किसी के यूनिफोर्म से अलग जूते ,छात्रों के बाल बड़े-बड़े, कपड़ों में स्याही गिरि हुई बालों पर बिना कंघी किए हुए स्कूल बैग गंदा हो रखा इस प्रकार के विद्यार्थियों की संख्या अधिक थी। विद्यालय के प्रत्येक कक्षा में केवल कुछ ही छात्र-छात्राएँ थी जो स्वच्छ बेशभूषा में नजर आ रही थी जिससे की एक सभ्य विद्यार्थी की पहचान नजर आ रही थी ।

3- विद्यालय में आवश्यक सुविधाएं –

3.1 भवन और कक्ष

इस संबंध में जानने के लिए विद्यालय के सभी कक्षाओं के साथ ही प्रधानाचार्य कक्ष,कार्यालय,शिक्षक कक्ष,कंप्यूटर कक्ष,पुस्तकालय,विज्ञान प्रयोगशाला सभी कक्षाओं को देखने पर ज्ञात हुआ कि विद्यालय के पास कक्षा संचालन व अन्य गतविधियों के लिए प्रर्याप्त भवन है, विद्यालय का भवन दो भागों में है जिसमे कि प्रथम मुख्य भवन से दूसरे भवन तक पहुँचने मे कुछ समय लगता है। दोनों भवन इस प्रकार से प्रयोग हो रहे है- प्रथम मुख्य भवन- 6-12 तक की कक्षाएं संचालित हो रही है, साथ ही प्रधानाचार्य कक्ष,शिक्षक कक्ष,कार्यालय है।

द्वितीय भवन - विज्ञान प्रयोगशाला,कंप्यूटर कक्ष,पुस्तकलय,कार्यक्रम हाल है।

विद्यालय के एक भवन से दूसरे भवन अर्थात कक्षाओं से प्रयोगशाला पुस्तकालय तक जाने में कुछ दूरी तय करनी होती है जिसमें की काफी समय लगता है यदि छात्र कंप्यूटर लैब,प्रयोगशाला में जाते है तो कक्षा के कुल 35 मिनट के कालांश में 8-10 मिनट द्वितीय भवन तक पहुँचने में लगते है इस कारण विद्यार्थी का अधिक समय आने जाने में ही व्यतीत हो जाता है। लेकिन साथ ही इन दोनों भवनो में अधिक कक्ष ऐसे है जो जर्जर

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्थिति में है जहां पर बैठकर छात्र-छात्राएँ शिक्षण कार्य तो कर रहे है लेकिन उन कक्षों मे छत, फर्श टूट-फुट की स्थिति में, इन कक्षों में दीवारे टूटी हुई स्थिति में दीवारों का रंग उतरा हुआ, कक्षों में खिड़की,दरवाजे टूटी हुई स्थिति मे इन कक्षों की स्थिति बिलकुल नाजुक बनी हुई थी जिसमे छात्र-छात्राएँ अध्ययन कर रहे है लेकिन इन अधिकांश कक्षों की स्थिति शिक्षण कार्य के लिए बिल्कुल भी उचित नहीं है। विद्यालय में कुछ कक्षों जिसमे प्रधानाचार्य कक्ष, कार्यालय, प्रयोगशाला, कमरों का निर्माण हाल ही में करवाया गया है, अन्य विद्यालय का सम्पूर्ण ढांचा काफी पुराना है।

3.2 शौचालय-

विद्यालय मे सबसे बड़ी समस्या ओर महत्वपूर्ण समस्या थी शौचालय की सुविधा, छात्र–छात्राओं के लिए शौचालय की कोई भी व्यवस्था नहीं थी। विद्यालय मे दो शौचालय थे जिसमे से की एक महिला शिक्षक के लिए और एक पुरुष शिक्षक के लिए है दोनों में स्वच्छता की स्थिति थी। छात्र–छात्राओं के लिए शौचालय की कोई सुविधा नहीं थी, जिससे की विद्यार्थियों को काफी समस्या होती है, तथा छात्र विद्यालय के दाहिने छोर की तरफ जाते है और छात्राएँ बाएँ छोर की तरफ जाते है। छात्र-छात्राएँ इस गंभीर समस्या का सामना कर रहे है।

उत्तरदाता03 [H]बताते है कि "सभी छात्र-छात्राएँ इस गंभीर समस्या का सामना कर रहे है,हमको खुले में जाने के लिए मजबूर है लेकिन इस बारे में विद्यालय प्रबंधन कोई ठोस कदम नहीं उठाता है।"

3.3 पानी –

विद्यालय में पानी के लिए विद्यालय के दोनों भवनो में 2000 ली. के एक-एक टैंक है जो कि 24 घंटे पानी से भरा हुआ हुआ होता है, तथा विद्यालय में पानी की आपूर्ति निरंतर बनी रहती है,टैंक की समय-समय पर सफाई की जाती है। पानी को गंदगी से दूर रखने के लिए उसमें ब्लीचिंग पाउडर का प्रयोग किया जाता है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विद्यालय में पीने के लिए स्वच्छ जल का प्रयोग किया जा रहा है, विद्यालय के एक छोटे से कक्ष में पानी शुद्धिकरण मशीन का प्रयोग किया जा रहा है, आस पास स्वच्छता नजर आ रही थी, स्वच्छ पानी की उपलब्धता के बारे में छात्रों व शिक्षकों से पूछा गया ।

उत्तरदाता 03 [I]बताते है "पीने योग्य स्वच्छ पानी की व्यवस्था विद्यालय में है,लगभग 6 महीने पूर्व से ही निरंतर शुद्ध पानी की व्यवस्था चली आ रही है इससे पूर्व हमे टैंक का ही पानी पीना पड़ता था। सभी छात्र-छात्राएँ इससे बहुत खुश है"।

उत्तरदाता 02 [B]बताते है " विद्यालय में सभी के लिए स्वच्छ पानी की व्यवस्था है जिसमे की पानी शुद्धिकरण मशीन का प्रयोग किया जा रहा है। जिसमे की समय अंतराल में उसमे लगी कैन्डल बदलनी पड़ती है। जिससे स्वच्छ पानी निरंतर मिलता रहे"।

2.4 पुस्तकालय-

शोधकर्ता द्वारा पुस्तकालय का निरीक्षण किया गया पुस्तकालय की व्यवस्था भवन न.-2 में की गयी है शोधकर्ता द्वारा पुस्तकालय के कक्ष में प्रवेश करने पर पाया गया पुस्तकालय कक्ष इस प्रकार से है कि जहां पर विद्युत बल्ब जलने के बाद भी स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहा था, पुस्तकालय कक्ष काफी पुराना है वहाँ पर सफाई की व्यवस्था थी। किताबों को बंद आलमारी मे रखा हुआ था जिसमे की किताबों की संख्या इतनी थी की पाँच बड़ी आलमारियाँ भरी हुई थी।

शोधकर्ता द्वारा विवरण पुस्तिका देखा गया जिसमे सभी महत्वपूर्ण पुस्तकें जो छात्रों के लिए ज्ञानवर्धक थी जिसमें कुछ प्रेरणादायी पुस्तकें, सामान्य ज्ञान, अंग्रेजी शब्दकोश, पत्रिकाएँ मौजूद थी और समाचार पत्र भी विद्यालय में प्रतिदिन आता है।

पुस्तकालय में रीडिंग कक्ष की कोई व्यवस्था नहीं है, छात्र पुस्तकालय से केवल कभी कभी पुस्तकें ले जाते है वहाँ पर बैठ कर पढ़ने की व्यवस्था ना होने से कोई भी वहाँ नहीं पढ़ पा रह थे। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन मे पाया कि विद्यार्थियों का पुस्तकालय के प्रति कोई रुझान नहीं दिखा न्यून मात्र मे छात्र वहाँ जा रहे थे।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पुस्तकालय की व्यवस्था दो शिक्षकों के पास थी जो अपने कार्य के साथ एक समय पर पुस्तकालय की व्यवस्था भी संभाल रहे है, इसमे छात्र तभी पुस्तकें ले सकता है जब शिक्षक के पास समय हो अर्थात विद्यालय समय पर किसी भी समय पुस्तक नहीं मिल सकती।

पुस्तकालय के बारे मे शिक्षकों और विद्यार्थियों से पूछने पर उत्तरदाता 02[C] द्वारा बताया गया "नए सत्र के शुरुवात में शिक्षा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष बजट आता है। इस बजट की राशि प्रत्येक वर्ष निश्चित तो नहीं है लेकिन इसकी राशि 3 से 5 हज़ार के बीच होती है तो इस बजट के हिसाब से विद्यालय प्रशासन प्रत्येक वर्ष नयी पुस्तकें खरीदते है"।

उत्तरदाता 55[J] द्वारा बताया गया हमारे लिए पुस्तकालय की व्यवस्था तो है,लेकिन वहाँ पर रीडिंग रूम की व्यवस्था नहीं है। जिससे कम ही छात्र-छात्राएँ वहाँ पर जाते है।

2.5 कंप्यूटर –

विद्यालय में कंप्यूटर लैब भवन न-2 में है, यहाँ पर पाँच कंप्यूटर रखे हुए है जो चालित अवस्था में थे जहां पर छात्रो की बैठने की पूर्ण व्यवस्था है, लेकिन सभी छात्र कंप्यूटर का प्रयोग एक साथ कर पाने में असमर्थ थे क्योंकि कंप्यूटर की पूर्ण व्यवस्था नहीं है यदपि कंप्यूटर की कक्षा में सैद्धांतिक और प्रयोगात्माक दोनों प्रकार का ज्ञान दिया जाता है।शोधकर्ता द्वारा लगातार विद्यालय में रहने पर यह पाया गया कि किसी भी कक्षा के छात्रों को इस दौरान कंप्यूटर लैब में नहीं ले जाया गया।

भवन न.1 जहां सभी शिक्षण कक्षाएं संचालित हो रही है और भवन न.2 जहां कंप्यूटर लैब संचालित होता है। जिसमें की 6-10 मिनट की दूरी दोनों भवनो में है जिससे की छात्रो का कंप्यूटर का कालांश का 35 मिनट के समय में से 6-8 मिनट व्यतीत हो जाते है। जिससे छात्र कंप्यूटर शिक्षण से वंचित हो रहे है ।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उत्तरदाता 03[K]बताते है "विद्यालय में कंप्यूटर है। कंप्यूटर सीखाने के लिए शिक्षक भी है, लेकिन इस सबके बावजूद भी कोई फायदा नहीं है, क्योंकि हम विद्यार्थियों को कंप्यूटर का कोई लाभ नहीं मिल पाता। लैब में कभी- कभी ले जाया जाता है जिससे हम लोग ठीक से कुछ भी नहीं सीख पाते"।

2.6 विज्ञान प्रयोगशाला-

विद्यालय में भवन न.2 में पर ही विज्ञान प्रयोगशाला संचालित की जा रही है इसके लिए काफी बड़ा हाल है यहाँ पर देखने पर ज्ञात हुआ कि प्रयोगात्मक ज्ञान देने के लिए बहुत सारे उपकरण रखे गए है, और इस प्रयोगशाला में एक लैब सहायक की नियुक्ति की गयी है जिसका कार्य उपकरणो की देखरेख का है, विज्ञान प्रयोगशाला में जाने पर ज्ञात हुआ की बाहर से ही गंदगी फैली हुई थी प्रयोगशाला में शोधकर्ता द्वारा पाया गया कि एक दिन भी इस दौरान किसी भी कक्षा के छात्रों को प्रयोगशाला में नहीं ले जाया गया, इस संदर्भ में उत्तरदाता 03[L] बताते है "जब भी विज्ञान विषय में प्रयोगत्मक तथ्य सामने आते है तो विज्ञान अध्यापक हमे प्रयोगशाला में ले जाते है और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते है"।

2.7 विद्‌युत –

विद्यालय में सभी कक्षाओं जहाँ शिक्षण कार्य किया जाता है में पाया गया कि किसी भी कक्षा में विद्‌युत की व्यवस्था नहीं है, केवल कार्यलय, प्रधानाचार्य कक्ष में, कंप्यूटर कक्ष, विज्ञान प्रयोगशाला में ही विद्‌युत व्यवस्था है शिक्षण कक्षा जहाँ संचालित होते है वहाँ विद्‌युत की व्यवस्था नहीं है

विद्यालय में किसी भी कमरे में पंखे की व्यवस्था नहीं है, छात्र- छात्राएँ गर्मी से काफी परेशान नजर आ रहे थे । वे धूप से तपति गरम छत के नीचे बिना पंखे की हवा के रहने को मजबूर थे छात्र जैसे ही कक्षा खाली मिले बाहर चले जा रहे है जिससे की काफी अव्यवस्था नजर आ रही थी।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उत्तरदाता 03 [M]बताते है "जिस समय बारिश का मौसम होता है तो कक्षाओं में अंधेरा छा जाता है बिना विद्युत की काफी समस्या होती है, और साथ ही गर्मी के समय में बिना पंखे के कक्षा में रहना मुश्किल हो जाता है"।

4. विद्यालय का स्थानीय सामाजिक वातावरण-

विद्यालय के स्थानीय व सामाजिक वातवरण के अंतर्गत पाया गया कि विद्यालय के आस-पास का वातावरण कुछ विशेष प्रभावकारी नहीं था जिससे कि छात्र- छात्राएँ अधिक प्रभावित हो सकें इस स्थान पर विद्यालय के सिवाय काफी दूर तक भी कुछ विशेष प्रकार के अन्य विभाग या अन्य प्रकार की कोई संस्था नहीं है जिससे की छात्र-छात्राएँ अपने शैक्षिक वातवरण के साथ कुछ विशेष प्रकार से प्रेरित हो पाएँ विद्यालय से कुछ दूरी पर मुख्य बाजार है, जहां कोई विशेष प्रकार का कोई आकर्षण नहीं है तथा विद्यार्थियों के लिए उचित सामाजिक वातवरण का यहाँ पर अभाव है।

5. विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि और जीवन स्थिति –

विद्यालय एक ग्रामीण क्षेत्र से आता है जहां पर बहुत अधिक सुविधाएं तो मौजूद नहीं है लेकिन एक सीमित स्तर तक सुविधाएं है। विद्यालय मे वर्तमान में 170 की संख्या है, यदपि शोध अध्ययन मई माह में किया गया लेकिन जुलाई माह में और भी छात्र-छात्राएँ पंजीकृत होते है ,जहां पर विद्यालय स्थापित है यहाँ पर इसी के आस-पास के ग्रामीण पृष्ठभूमि से छात्र-छात्राएँ विद्यालय में आते है, जो की सभी सामान्य परिवारों से है इन लोगो की स्थिति ना तो बेहतर है ना ही अतिनिम्न ये सभी मध्यम परिवारों से है जिससे की छात्र-छात्राओं का व्यवहार भी सामान्य था और इनके शैक्षिक वातावरण पर इसका प्रभाव भी सामान्य था।

6. कक्षा शिक्षण प्रभावशीलता –

विद्यालय में कक्षा शिक्षण के क्रम में प्रथम दिन कक्षा-8 में शोधकर्ता द्वारा द्वितीय वादन का निरीक्षण किया गया, कक्षा में प्रवेश करते ही कक्षा शिक्षण में पाया गया कि संस्कृत

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विषय का कालांश था।विषय अध्यापक द्वारा सर्वप्रथम कक्षा में प्रवेश करने पर छात्रों द्वारा सुबह का अभिवादन किया गया, उसके बाद श्यामपट्ट की प्रविष्टियाँ पूर्ण की गयी तथा छात्रों को पूर्व के दिन पढ़ाये हुए तथ्यों पर विचार विमर्श किया जिसमें की छात्रों द्वारा उत्तर किए गए।

शिक्षक का व्यवहार छात्रों के साथ मित्रतापूर्वक था और विषय के साथ अपने जीवन से जुड़े प्रत्यक्ष उदाहरणो को छात्रों के सामने रख रहे थे लेकिन छात्र इस और कोई गंभीर नहीं थे वे आपस में ही कक्षा के मध्य बात कर रहे थे, और शिक्षण के प्रति उनका रुझान अधिक नहीं था।

शोधकर्ता द्वारा तृतीय वादन में कक्षा-9 का निरीक्षण किया गया जहां गणित विषय का कालांश था, शिक्षक द्वारा कक्षा में प्रवेश होने पर श्यामपट्ट पर कोई प्रविष्टियाँ पूर्ण नहीं की गयी। शिक्षक आने के बाद कुर्सी में बैठ गए तथा छात्रों से गणितीय प्रश्न हल करने के लिए दे दिये। शिक्षक का व्यवहार छात्रों के साथ काफी हद तक मित्रतापूर्वक था जिसका की बच्चों पर अच्छा अभाव पड़ रहा था।

गणित की कक्षा में पाया गया कि केवल छात्र ही गणित विषय में शामिल है, एक भी छात्रा कक्षा-9 में गणित विषय में नहीं थी, सभी छात्राओं का गणित के स्थान पर गृहविज्ञान विषय में नामांकन था।

उत्तरदाता 03[N]बताते है "हमने गणित विषय इसलिए नहीं ली क्योंकि हमे डर लगता है और लगता है कि हम नहीं कर पाएंगे"।

द्वितीय दिवस पर कक्षा 9में चतुर्थ कक्षा सामाजिक विषय की थी। शिक्षक आए और सीधे अपनी सीट में बैठ गए न ही कोई श्यामपट्ट पर प्रविष्टि की गयी, अध्यापक अपनी सीट में बैठकर छात्रो से विषय से संबन्धित सामान्य प्रश्न कर रहे थे। लेकिन छात्रो कोई उत्तर नहीं दे पा रहे थे इससे स्पष्ट हो रहा था कि कक्षा शिक्षण प्रभावशील नहीं हो रहा है और भूगोल विषय में अक्षांश और देशांतर पढ़ा रहे लेकिन विद्यार्थियों को समझाने के लिए न

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तो उनके द्वारा श्यामपट्ट का प्रयोग नहीं किया गया ना ही किसी चार्ट, मोडेल या किसी तरह से विद्यार्थियों को समझाया गया केवल मौखिक ज्ञान दिया जा रहा था।

शिक्षक का व्यवहार छात्रों के प्रति अत्यंत गंभीर था, छात्र भी शांत थे कक्षा का वातावरण गंभीर बना था छात्र भी अपने उत्तरों को रखने में काफी देर लगा रहे थे।

शिक्षक के शिक्षण कार्य करने के व्यवहार से कोई उत्साह नहीं दिख रहा था। वे आराम से कुर्सी में बैठ कर ही पढ़ा रहे थे जबकि प्रश्न पूछते समय मानचित्र संबन्धित प्रश्न आए जिनका जवाब छात्र नहीं दे पाये उनको भी अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट के प्रयोग से नहीं समझाया गया। शुरू से लेकर कक्षा समाप्त होने तक कुर्सी में बैठ कर ही अध्यापन कार्य कर रहे थे, जिसमे की छात्र भी उदासीन नजर आ रहे थे।

सभी कक्षाओं का इसी तरह निरीक्षण करने पर कुछ महत्वपूर्ण एक जैसे तथ्य सामने आए है जो इस प्रकार है –

कक्षा में शिक्षक के प्रवेश करते ही यह बात पायी गयी कि कक्षा में पहले से मौजूद गंदगी के बारे में, छात्रो की बेंच जिस पर छात्र थे अव्यवस्थित थी इस बारे में बार बार अलग-अलग शिक्षक कक्षा में प्रवेश करने के बाद भी कोई संज्ञान नहीं लिया गया।

कक्षा शिक्षण में एक सीमित संसाधनो के द्वारा विषय वस्तु का ज्ञान दिया जा रहा था, किसी भी तकनीकी का प्रयोग कक्षा शिक्षण में नहीं किया जा रहा था।

विद्यालय में कक्षाओं में कोई अनुशासन नजर नहीं आ रहा था, विद्यालय में जैसे ही कक्षा खत्म हो रही छात्र मनमाने तरीके से बाहर घूम रहे, कक्षाओं से बाहर जाने पर 10-10 मिनट बाद कक्षाओं में आ रहे थे छात्रों में किसी प्रकार अनुशाशन नहीं दिख रहा था।

कक्षा शिक्षण में अधिगम टूल के रूप में किसी भी प्रकार के टीएलम का प्रयोग विद्यालय में किसी भी कक्षा में नहीं किया जा रहा है, कक्षाओं के निरीक्षण पर पाया गया की व्याख्यान विधि का प्रयोग अधिक किया जा रहा है तथा कुछ ही कक्षों में श्यामपट्ट चाक द्वारा समझाया जा रहा है विद्यालय में विद्यार्थियों को शिक्षण कार्य के दौरान पढ़ने के लिए

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

किसी तकनीकी का प्रयोग नहीं किया जा रहा है विद्यालय में अधिगम के लिए किसी भी आधुनिक प्रकार के श्रव्य, दृश्य सामग्री का प्रयोग नहीं किया जा रहा था, विद्यालय वर्तमान मे भी तकनीकी से काफी दूर पाया गया और न ही इस प्रकार के साधन विद्यालय में उपलब्ध है। विद्यालय के शिक्षण के दौरान अधिगम के लिए शिक्षकों द्वारा व्याख्यान विधि का ही प्रयोग किया जा रहा था यहाँ तक श्यामपट्ट का प्रयोग भी बहुत कम मात्र मे किया जा रहा था।

7. सहयोग सहभागिता का स्तर –

सहयोग और सहभागिता के स्तर में विद्यालय में अध्यापक वर्ग में बहुत कमी पायी गयी शिक्षा के उत्थान के लिए कोई विशेष कार्य नहीं किए जा रहे है, विद्यालय में शिक्षक वर्ग में ही एकजुटता देखने को नहीं पायी गयी नेतृत्व का भाव बहुत न्यून मात्रा में प्रदर्शित हो रहा था यदपि विद्यालय में सभी कुशल और उच्च शैक्षिक योग्यता रखने वाले शिक्षक है लेकिन सम्पूर्ण स्टाफ में एकता की कमी है, विद्यालय में विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता का स्तर बहुत अधिक था लेकिन इसके लिए शिक्षक एकजुट होकर प्रतिबद्ध नहीं दिखे शिक्षक सामने खाली चल रही कक्षा जिसमे विद्यार्थी अस्त व्यस्त हो रखे थे कुछ बाहर घूम रहे थे कुछ कक्षाओं में यह दृश्य सामने कक्षा से स्पष्ट दिखाई दे रहा लेकिन शिक्षकों द्वारा इसको नजरंदाज किया जा रहा था, जिससे प्रतिदिन देखा गया की विद्यार्थियों का मनोबल इस तरह से बढ़ा हुआ मिला कि कक्षा के सभी छात्र मनमाने तरीके से गायब मिले अनुसंधानकर्ता द्वारा इस बात को स्वयं भी देखा गया कि एक कक्षा के छात्र विद्यालय में कुछ कक्षाएं पढ़ने के बाद पूरे चार कक्षाओं से गायब थे लेकिन इस संदर्भ मे कक्षा की ही छात्रा बताते है।

उत्तरदाता[O] बताते है की हमारी कक्षा के छात्र कई विषय की कक्षाओं से गायब रहते है लेकिन इसके लिए विद्यालय प्रबंधन कोई ठोस कार्यवाही नहीं करता है और छात्रो को एक आदत सी हो गयी की वो प्रतिदिन इसी तरह के व्यवहार को अपनाते है, और इस

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बात को शिक्षक भी जानते है लेकिन कोई भी इस पर कुछ नहीं कहता जिससे छात्र धीरे-धीरे शिक्षा से दूर हो रहे है और गलत कार्यों के प्रति अधिक जा रहे है।

इस तरह से अध्ययन मे पाया गया कि विद्यालय प्रबंधन के अंतर्गत शिक्षकों और प्रधानाचार्य मे भी पूर्ण रूप से एकता नहीं है, विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए प्रतिबद्ध ना होने से विद्यार्थी भी इस भाव से धीरे-धीरे परे हो रहे है यहाँ तक छात्र-छात्राएँ भी अपने शिक्षकों के आपसी व्यवहार से भली-भांति परिचित है और आपस में इस बारे में बाते करते हुए पाये गए।

विद्यालय प्रबंधन भी विद्यार्थियों की शिक्षा को बेहतर बनाने और विद्यालय को संसाधनो से पूर्ण करने में भी कोई विशेष भूमिका नजर नहीं आई विद्यालय में अधिगम के लिए किसी तकनीकी का प्रयोग न किया जाना पूर्व की ही भांति टीएलम की दृष्टि से व्याख्यान विधि और चाक श्यामपट्ट तक ही विद्यालय प्रबंधन सीमित है यहाँ मुख्य विषय के शिक्षको का अभाव विद्यालय प्रबंधन का इस हेतु कोई विशेष योगदान नहीं है।

8. विद्यालय प्रबंधन –

विद्यालय में विद्यालय प्रबंधन के अंतर्गत यह ज्ञात हुआ कि विद्यालय प्रबंधन शिक्षा की उच्च गुणवत्ता तक पहुँच बनाने के लिए दृढ़ता और प्रतिबद्धता के साथ कार्य करना होगा विद्यालय प्रबंधन के कार्य की वास्तविक स्थिति इस प्रकार थी-

विद्यालय में विद्यार्थियों में अनुशासन का बहुत अभाव पाया गया जिसमें कि विद्यालय में कई कक्षाएं खाली चलने पर विद्यालय में शिक्षक होते हुए भी छात्र-छात्राएँ बाहर घूम रहे थे। इस बात से स्पष्ट हो रहा था कि विद्यालय प्रशासन छात्रों के व्यवहार को अनुशासनपूर्ण बनाने मे असफल है।

अधिकांश शिक्षक कक्षा में 8-10 मिनट की देरी के बाद कक्षा में प्रवेश कर रहे थे, आकार कुर्सी में बैठ के पढ़ाना, कक्षा में आने पर श्यामपट्ट पर दिनांक तक अंकित नहीं करना, छात्रों से किसी भी प्रकार का कोई अभिवादन नहीं, कक्षा को व्यवस्थित न करना

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

साथ ही शिक्षण कार्य के प्रति अधिकांश शिक्षकों में जोश और उत्साह बहुत कम दिख रहा था, जिससे छात्र भी कक्षा में अधिक जिज्ञासु नहीं दिखाई दे रहे थे।

विद्यालय में जो शिक्षक उपस्थित नहीं थे उनकी कक्षाएं खाली चल रही थी विद्यालय प्रबंधन द्वारा इस बात का भी कोई संग्यान नहीं लिया गया तथा में खाली चल रही कक्षाओं में किसी भी प्रकार की अन्य व्यवस्था नहीं लगाई गयी थी, जिसके कारण छात्र-छात्राएँ कक्षाओं से बाहर घूम रहे थे।

विद्यालय में मुख्य विषयों के अध्यापको के पद विद्यालय में रिक्त चलने से कक्षाएं खाली चल रही थी जिसमे की विद्यार्थी काफी समय तक कक्षाओं से बाहर थे लेकिन विद्यालय प्रबंधन द्वारा इस बारे में किसी प्रकार के कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए।

9. विद्यालय में प्रधानाचार्य-शिक्षक क्रियाकलाप -

विद्यालय में प्रधानाचार्य शिक्षक क्रियाकलाप के अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि विद्यालय में प्रधानाचार्य और शिक्षक द्वारा शिक्षण कार्य के अतिरिक्त अन्य गतिविधि भी छात्रहित में की जा रही है, यहाँ पर पठन –पाठन के अतिरिक्त अन्य गतिविधि होती है, इसमें देखा गया कि शनिवार के दिन विद्यालय में 6 कालांश नियमित दिन कि भांति चले तथा अन्य दो कालांश में छात्र- छात्रों को क्रियाकलाप हाल में ले जाया गया जहाँ सभी कक्षाओं के विद्यार्थी एकत्रित हुए और सभी को शांत तरीके से बैठाया गया।

अध्यापक द्वारा इस गतिविधि की शुरुवात की गयी, सभी छात्र और अध्यापक यहाँ उपस्थित थे आरंभ करने के बाद छात्रो द्वारा बारी –बारी से अपनी पढ़ाई में आ रही समस्याओं पर प्रश्न पूछे गए तथा इसमे विषय में आ रही समस्याओं को विषय अध्यापक से पूछा गया जिसमे की अध्यापकों के द्वारा विद्यार्थियों की समस्याओं का निराकरण किया गया, इस विषय पर श्री उत्तरदाता द्वारा बताया गया कि विद्यालय में प्रत्येक शनिवार को "Doubt clearing day" मनाया जाता है जिसमे की छात्रों के द्वारा विषय से संबन्धित समस्या तथा अन्य कोई भी समस्या हो उसके बारे में प्रश्न किया जाता है

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जिसका निराकरण अध्यापकों के द्वारा किया जाता है, और इसी दिन "English day" को भी रखा गया है जिसमें देखा गया कि कुछ छात्रों कक्षा के अनुरूप छात्रों के समक्ष गए और अंग्रेजी में ही अपना परिचय छात्रों और अध्यापकों के सामने रखा, अध्यापकों ने बताया कि हम शनिवार के दिन अंग्रेजी में छात्रों से बात करवाते है, और अंग्रेजी को कैसे आसानी से बोला जा सकता है अंग्रेजी में आ रही समस्याओं और उसके प्रति छात्रों की रुचि पैदा करने के लिए एक तरह का वातवरण बनाया जाता है। छात्रों में भी इस तरह के गतिविधि से काफी खुशी नजर आ रही थी, और वे काफी उत्साहित नजर आ रहे थे। प्रधानाचार्य जी से विद्यालय को विकसित करने के लिए उनकी क्या रणनीति रहती है इस बारे में उनके द्वारा शिक्षको के साथ मिलकर जो गतिविधियां छात्रहित में की जा रही है उनके बारे में उत्तरदाता-01 द्वारा अनुसंधानकर्ता को बताया गया –

विद्यालय में छात्रहित में एन.एस.एस कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है।

विद्यालय का संख्या के साथ साथ शिक्षा की गुणवत्ता पर भी लगातार कार्य किया जा रहा है।

व्यक्तित्व विकास के लिए समय-समय पर छात्रों के बीच नए नए विशेषज्ञ आते है।

छात्रहित में विद्यालय पत्येक शनिवार को "Doubt Clearing Day" और "English Day" के मनाया जाता है।

महीने के अंत में प्रतिभा दिवस मनाया जाता है जिसमे सांस्कृतिक कार्यक्रम,कविता जैसे कार्यक्रम किया जाता है जिससे की छात्रों की प्रतिभा बढ्ने के साथ उनमे आत्मविश्वास भी बढ़ सकें।

परिचर्चा-

सतत विकास के अंतर्गत सभी बुनियाद सुविधाएं होनी आवश्यक है जिससे की सतत विकास के अंतर्गत बनाए गए 17 लक्ष्यों को 2030 तक बनाए गए निर्धारित समय तक

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पूरा किया जा सकें और सतत विकास की अवधारणा तक शत-प्रतिशत पहुँच हो लेकिन इसके अंतर्गत विद्यालय में केस अध्ययन द्वारा निम्नलिखित तथ्य सामने आए है -

- यहाँ पर छात्र-छात्राओं के लिए शौचालय की अलग से कोई व्यवस्था नहीं थी जिससे की अध्ययनरत छात्र-छात्रों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वर्तमान में हर घर शौचालय के लिए कार्य किया जा रहा है लेकिन जहां से समाज को शिक्षित करने का कार्य किया जा रहा है जो देश के स्वर्णिम भविष्य है उन्हे ही इस गंभीर समस्या का सामना करना पड़ रहा है।
- विद्यालय में आवश्यक सुविधाओं के अंतर्गत विद्‌युत का अभाव भी विद्यालय में पाया गया ,शिक्षण कक्ष के अंतर्गत 6-12 की किसी भी कक्षाओं में विद्‌युत की व्यवस्था नहीं थी जिससे विद्यार्थीयों को समस्या हो रही थी।
- विद्यालय में कक्षाओं में कहीं भी पंखे नहीं लगे हुए थे जिसमे शोधकर्ता द्वारा पाया गया कि छात्र-छात्राएँ गर्मी में पसीने पोंछते नजर आ रहे थे जिससे की विद्यार्थी मूलभूत सुविधाओं से वंचित हो रहे थे साथ इससे उनके पढ़ाई में व्यवधान उत्त्पन हो रहा था जिससे उनका मन पढ़ाई में नहीं लग रहा था। जबकि सतत विकास के अंतर्गत सभी मूलभूत सुविधाओं का होना आवश्यक बताया गया है।
- एस.डी.जी-6 में स्वच्छ जल का उल्लेख है, जिसमे बताया गया है कि स्वच्छ जल अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है सतत विकास के अंतर्गत 2030 तक सभी के लिए सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता तक सार्वभौमिक पहुँच प्राप्त करने का संकल्प लिया है इस संदर्भ में केस अध्ययन किए गए विद्यालय में पाया गया कि यहाँ पर स्वच्छ जल की पूर्ण व्यवस्था है जहां पर सभी विद्यार्थियों, अध्यापकों, अन्य कर्मचारी सभी के लिए स्वच्छ जल की पूर्ण उपलब्धता है।
- एस.डी.जी-2 में बनाए गए लक्ष्य में भूख की समाप्ति, बेहत्तर पोषण को रखा गया है इस संदर्भ में शोधकर्ता ने पाया कि विद्यालय में 6-8 के विद्यार्थियों को मध्याहन

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भोजन योजना के अंतर्गत बेहत्तर पोषण की व्यवस्था है जहां पर विद्यार्थियों को स्वच्छ भोजन, अलग-अलग दिन अलग भोजन और भरपेट भोजन दिया जा रहा है।

- एस.डी.जी-4 में सम्मान गुणवत्ता वाली शिक्षा और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को निर्धारित किया गया है और एस.डी.जी.4 को आगे बढ़ाने के लिए सूचना प्रोद्योगिकी का बेहतर उपयोग करने के लिए सयुंक्त राष्ट्र एजेंसियों,सरकारों और दूरसंचार उद्योग के बीच साझेदारी की है डिजिटल शिक्षा सुनिश्चित कर सकती है कि प्रत्येक बच्चे को उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री तक पहुँच सुनिश्चित है, डिजिटल शिक्षा प्रोद्योगिकी बुनियादी कौशल जैसे सहयोग समस्या समाधान और वैश्विक जागरूकता में सुधार करती है, लेकिन इस संदर्भ में विद्यालय में पाया गया कि शिक्षण कार्य के लिए किसी भी तकनीकी का प्रयोग नहीं किया जा रहा था, न ही छात्रो को किसी भी तकनीकी माध्यम से शिक्षा दी जाती है।
- एस.डी.जी-6 स्वच्छता को रखा गया है जिसमे की 2030 तक सबके लिए प्रर्याप्त और सम्मान स्वच्छता एवं साफ –सफाई सुविधाएं सुलभ कराना साथ ही 2030 तक प्रदूषण कम करके, खुले में कचरा फेंकना बंद करना ,जबकि इस संदर्भ में विद्यालय में कक्षाओं के बाहर ,कक्षाओं के अंदर पूरी तरह से कचरा फैला हुआ था, इसमे विद्यार्थीयों और तथा स्वच्छता के प्रति विद्यालय में अभाव पाया गया।

मुख्य बिन्दु निष्कर्ष –

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सतत विकास के लिए सरकार पुरजोर प्रयास कर रही है जिसमे कि सतत विकास को पूर्ण समझने के लिए इसमें 17 लक्ष्यों को भी तय किया गया है। जिसमें 2030 तक हरसंभव प्रयास किया जा रहा है कि उक्त लक्ष्यों की पूर्ति हो सकें, जिसमें कि जिसमें की शिक्षा की महत्वपूर्ण भागीदारी हो सकती है, क्योंकि शिक्षा किसी भी देश में

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

परिवर्तन लाने का महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा ही लोगो को शसक्त बनाने का शक्तिशाली यंत्र है, सतत विकास के सभी लक्ष्यों के मुख्य द्वार से ही प्रवेश करना है, जिसमें शिक्षा की औपचारिक रूप से उत्पति विद्यालय जीवन से प्रारम्भ व उन्मुख बनाने की आवश्यकता है। उपरोक्त गुणात्मक शोध के द्वारा विद्यालय जीवन को अध्ययन करने के बाद स्पष्ट हुआ है।

विद्यालय में विद्यालय प्रशासन छात्र-छात्राओं में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का अभाव पाया गया। सतत विकास के संदर्भ में विद्यालय प्राकृतिक वातावरण का अध्ययन में पाया गया कि विद्यालय में पठन-पाठन और जीवन शिक्षा के पूर्ण उदेश्य की प्राप्ति हेतु अनुकूल है। विद्यालय में बुनियादी आवश्यक सुविधाओं में शौचालय का

अभाव पाया गया, विद्यालय में कुछ कक्षों की जर्जर स्थिति थी जो शिक्षण कार्य के लिए उचित नहीं थे।

विद्यालय में शिक्षण व अधिगम के साधन के रूप में विद्यालय में शिक्षण कार्यो हेतु और विद्यार्थियों के अधिगम को सरल बनाने हेतु कंप्यूटर, प्रोजेक्टर, वीडियो, या अन्य किसी भी तकनीकी का प्रयोग विद्यालय में नहीं किया जा रहा, शिक्षण कार्य वर्तमान में श्यामपट्ट, चाक और व्याख्यान के द्वारा ही किया जा रहा है।

प्रयोगशाला की उचित व्यवस्था, शुद्ध जल की व्यवस्था ,पुस्तकालय की व्यवस्था थी यदपि पुस्तकालय में रीडिंग कक्ष की उचित व्यवस्था का अभाव था। कंप्यूटर शिक्षण जो की छात्रो की आवश्यकता के रूप में आज बन चुका है कंप्यूटर की विदयालय में व्यवस्था होने पर कंप्यूटर शिक्षण का अभाव पाया गया।

विद्यालय में मूलभूत संसाधनो में विद्यालय भवन में शिक्षण कक्षों की संख्या प्रर्याप्त है लेकिन शिक्षण कक्षों की स्थिति जर्जर है शिक्षण कक्षाओं की स्थिति शिक्षण कार्य के लिए उचित नहीं है विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए फर्नीचर की व्यवस्था पूर्ण है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सतत विकास के संदर्भ में प्रधानाचार्य शिक्षक क्रियाकलाप अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि छात्रहित के लिए उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए आने वाले भविष्य को विभिन्न गतिविधि के माध्यम से मजबूत करने के लिए कार्य किया जा रहा है।

विद्यालय में शिक्षक प्रधानाचार्य में एकता का अभाव पाया गया जिससे विद्यालय में अव्यवस्था पायी गयी इसी के कारण छात्र- छात्राओं में भी अनुशासन का अभाव पाया गया ।

विद्यालय में शिक्षण के लिए प्रयोग की जा रही कक्षाओं में शिक्षण के प्रति किसी प्रकार का कोई आकर्षण नहीं पाया गया जिसमे की कक्षाओं में विद्युत व्यवस्थाका अभाव, खाली पड़ी हुई कक्षा के दीवारे कक्ष की नाजुक स्थिति को बता रहा था।

शिक्षण कार्य में कक्षा में मोडेल, चार्ट ,तकनीकी शिक्षण का प्रयोग का अभाव पाया गया। व्याख्यान विधि का प्रयोग अधिक किया जा रहा था।

कक्षाकक्ष अंतःक्रिया में शिक्षक छात्र व्यवहार मित्रतापूर्वक था जिसमे की विद्यार्थियों की समस्या का समाधान किया जा रहा था लेकिन विद्यालय के कक्षाओं में छात्रों-शिक्षकों के बीच प्रेरित बातों का संवाद का अभाव पाया गया। निर्देशन परामर्श का अभाव भी शोध अध्ययन में पाया गया

शिक्षकों में मुख्यतः शिक्षण कार्य के प्रति उत्साह का अभाव पाया गया, शिक्षकों में इन सर्विस प्रशिक्षण का अभाव भी पाया गया।

विद्यालय में सहयोग और सहभागिता के स्तर में विद्यालय प्रशासन में एकजुटता का अभाव पाया गया जिसमे की शिक्षको का आपसी सामंजस्य की कमी, प्रधानाचार्य की नेतृत्व क्षमता का अभाव जिससे की विद्यालय में विद्यार्थियों में अनुशासन का अभाव बनता चला जा रहा है, और विद्यालय शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में कमजोर होता जा रहा है। इससे विद्यालय अपने अपने उद्देश्यों से दूर होता चला जा रहा है।

विद्यालय में प्रधानाचार्य शिक्षक द्वारा छात्रहित में कई गतिविधियां भी आयोजित करवाई जाती है जिससे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में वृद्धि के साथ ही उनमे नेतृत्व की भावना विकसित होती है।

विद्यालय मे स्थायी प्रधानाचार्य की नियुक्ति न होने से विद्यालय में शिक्षकों छात्र-छात्राओं अन्य कर्मचारियों पर इसका प्रभाव पाया गया जिसमे की विद्यालय की गतिविधियों का सही संचालन करने मे आ रही समस्यायेँ पायी गयी तथा मुख्य विषयों के शिक्षकों का अभाव होने से भी विद्यालय में उचित प्रकार की गुणवततापूर्वक शिक्षा देने में समस्याएँ पायी गयी।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ सूची

अली ,लाइक फतेह. (2006). *हमारा पर्यावरण.* नई दिल्ली: नेशनल बूक ट्रस्ट इंडिया.

डॉ एच°के°कपिल. (2009). *अनुसंधान विधियाँ.* आगरा: एच°पी°भार्गव बुक हाउस.

डॉ एन के शर्मा. (2009). *शोध प्रविधि .* नई दिल्ली : के°एस°के° पब्लिशर्स .

डॉ गणेश पाण्डेय, अरुणा पाण्डेय. (2012). *शोध प्रविधि.* नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स.

डॉ ब्रजकिशोर शर्मा, डॉ महेंद्र कुमार ,डॉ मार्कण्डेय प्रसाद द्वीवेदी. (2008). *सतत शिक्षा.* आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.

डॉ संतोषी मित्तल डॉ मीनू अग्रवाल. (2010). *21 वीं सदी में पर्यावरण एवं पर्यावरण शिक्षा .* मेरठ : आर लाल बुक डिपो .

मेघा सिन्हा. (2006). *पर्यावरण अध्ययन : प्रकृति एवं महत्व .* नई दिल्ली : वंदना पब्लिकेशन्स.

सिंह, अरुण कुमार. (2010). *मनोविज्ञान ,समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ.* मोतीलाल बनारसीदास.

अग्रवाल, ड. स. *(2010). 21 डीई* दिल्ली *:* के°एस°के° पब्लिशर्स *.*

सिन्हा, म. *(2006). पर्यावरण अध्ययन : प्रकृति एवं महत्व .* नई दिल्ली *:* वंदना पब्लिकेशन्स*.*

https://en. M.wikipedia.org>wiki>sustainable_development_goals

https://en. Wikipedia .org /wiki/Brundtland_commssion

www.In.undp.org

http://shodh.inflibnet.ac.in/bitstream/123456789/2784/3/03_review of litreature.pdf

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/26958/10/10_chapter%202.pdf

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/160230/7/main%20thesis%20revised.pdf

https://ris.org.in/sites/default/files/RIS-Diary-April_HINDI.pdf

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/156104/10/10-chapter-2.pdf

https://shodhgangotri.inflibnet.ac.in/bitstream/123456789/6951/3/03_review%20of%20literature.pdf

*www.hindilibraryindia.com/essay/sustainable-development/*सतत-िवकास-पर-िनबंध*-essay-on-sustainable-development-in-hindi/15342*

*www.essaysinhindi.com/essays/*सतत-िवकास-पर-िनबंध*-essay-on-sustainable-development-in-hindi/13251*

https://www.scientificworld.in/2015/03/sustainable-development-hindi.html

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

in.one.un.org/sustainable-development-goal/sdg-goal-4/

https://translate.google.com/translate?hl=hi&sl=en&u=https://www.developmenteducationreview.com/issue/issue-6/whole-school-approach-eduation-sustainable-development-pilot-projects-systemic-change&prev=search

सतत विकास पर फिनिश राष्ट्रीय आयोग (2006) *सतत विकास और कार्यान्वयन योजना 2006-2014 के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए रणनीति*, उपलब्ध: *http: // **www.edu.fi/julkaisut/engnetKekajajako.pdf*** ।

यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (2005) *ड्राफ्ट इंटरनेशनल इंप्लीमेंटेशन स्कीम फॉर द यूनाइटेड नेशंस डिकेड ऑफ एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट (2005-2014) , 172 EX / 11,* पेरिस: यूनेस्को ।

https://www.developmenteducationreview.com/issue/issue-6/whole-school-approach-eduation-sustainabledevelopment-pilot-projects-systemic-change

*Finnish National Commission on Sustainable Development (2006) Strategy for Education and Training for Sustainable Development and Implementation Plan 2006-2014, available: http://**www.edu.fi/julkaisut/engnetKekekajako.pdf**.*

Henderson, K and Tilbury, D (2004) Whole-School Approaches to Sustainability: An International Review of Sustainable School Programs, Canberra: Australian Research Institute in Education for Sustainability.

Sustainable Development Education Panel (2003) Learning to Last: The Government's Sustainable Development Education Strategy for England, London: DEFRA.

United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization (2005) Draft International Implementation Scheme for the United Nations Decade of Education for Sustainable Development (2005-2014), 172 EX/11, Paris: UNESCO.

United Nations Economic Commission for Europe (2005) UNECE Strategy for Education for Sustainable Development, Vilnius: UNECE.

Cite Your Article as:

Vipin Sinha & Prof. Seema Dhawan. (2024). SATAT VIKAS KE SANDARBH MAIN VIDYALAY JIVAN KA ADHYAYAN. In Scholarly Research Journal for Interdisciplinary studies (Vol. 12, Number 80, pp. 101–125). Zenodo. https://doi.org/10.5281/zenodo.10512116

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies